इसमें खादी-विचार की ऐतिहासिक गहराई और प्रसार
की मौजूदा चुनौतियाँ सहज ही महसूस की जा सकती है।
(डॉ. राजीव रंजन गिरि)

खादी : एक विचार

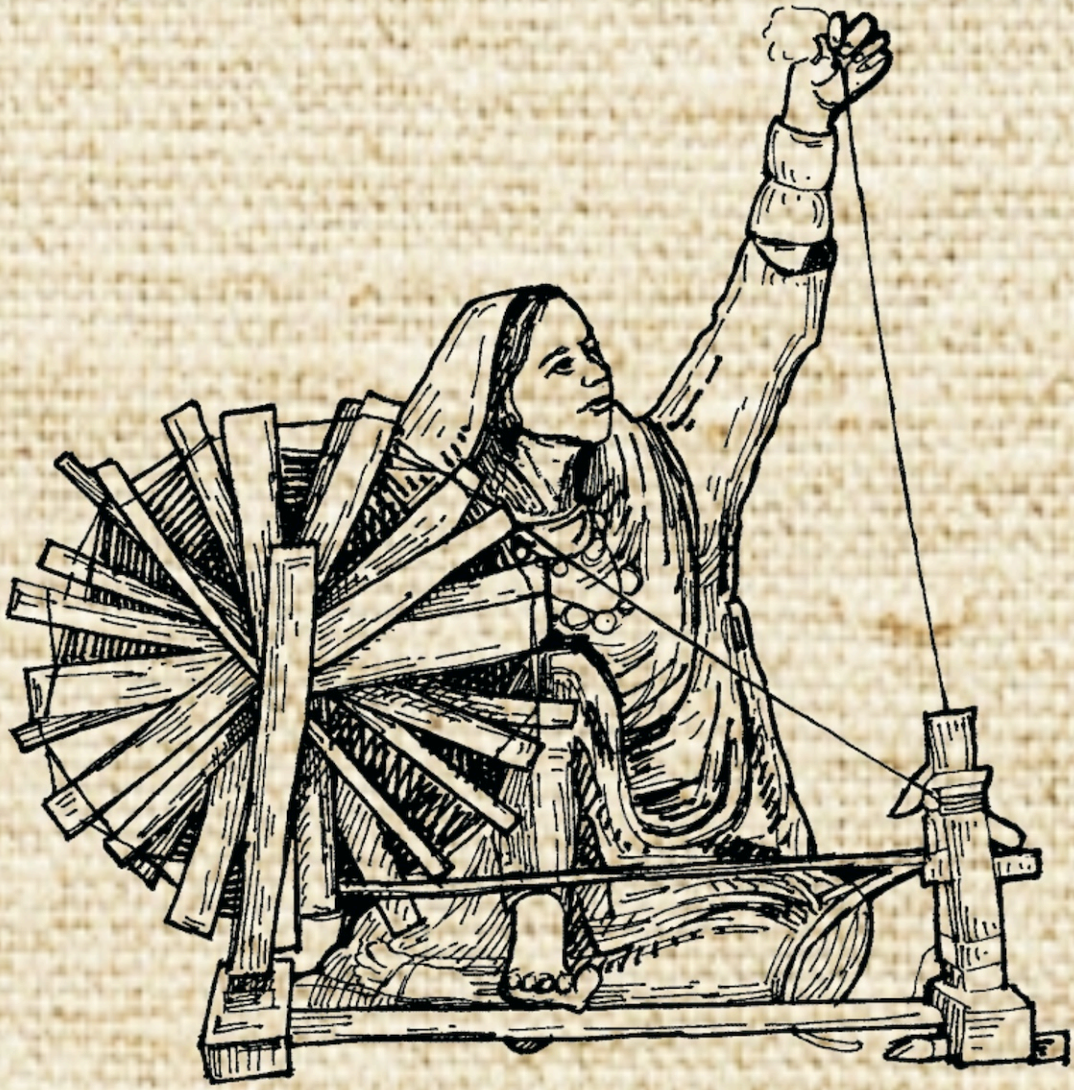

पंकज कुमार सिंह

खादी : एक विचार

पंकज कुमार सिंह

प्रकाशक: नॉटनल

प्रकाशन: मई, 2025

© पंकज कुमार सिंह

भूमिका

खादी की उत्पत्ति और विकास उसकी (खादी की) अपनी वैचारिकी से हुआ है। जब गाँधीजी ने वस्त्र में विचार का समावेश कर खादी नाम दिया तब औद्योगिक क्रांति चरम पर थी। वस्त्र का उत्पादन बड़े पैमाने पर मशीनों से हो रहा था। खादी जो हाथ केंद्रित और विकेंद्रित वस्त्र उत्पादन है, वह अपने विचार के बदौलत ही चलता रहा, जिससे वह न केवल लोकप्रिय हुआ अपितु आजादी का प्रतीक भी बना। लोगों ने विदेशी कपड़ों की होली जलाई और खादी अपनाई।

उन दिनों खादी-विचार का प्रचार-प्रसार करने वाले स्वतंत्रता सेनानी हुआ करते थे। उन्होंने न केवल अपने-अपने आचरण से अपितु अपनी लेखनी और वक्तव्यों से खादी-विचार का प्रचार-प्रसार किया। उन दिनों खादी से संबंधित पत्र-पत्रिकाएँ और पुस्तकों की प्रचुरता थी। आज भी खादी जीवित है, किंतु उसके विचार का प्रचार-प्रसार न के बराबर हो रहा है। वर्तमान में खादी से संबंधित पत्र-पत्रिकाएँ खोजने पर एक-दो मिल जाए तो बहुत है, इससे संबंधित पुस्तकें तो और भी दुर्लभ होती जा रही है। आज खादी के विचार को नजर अंदाज कर उसके व्यापारिक नफा-नुकसान की बातें हो रही हैं, जो खादी का गुण धर्म नहीं रहा है।

खादी जन्म से ही विचार की वस्तु है, न कि व्यापार की। यदि व्यापार है भी तो 'नो प्रॉफ़िट - नो लॉस' के दर्शन पर आधारित है। आज भी खादी अपने ग्राहकों को अपना परिवार मानती है। संस्थाएँ न्यासिता के दर्शन पर का र्य करती है। यानी खादी संस्थाओं की संसाधन व संपत्ति किसी एक व्यक्ति की नहीं अपितु समाज की है। ऐसे खादी विचार को प्रचारित-प्रसारित लेखक अपने लेखों के माध्यम से करता रहा है। उन्हीं में से कुछ लेखों को संकलित कर पुस्तक रूप में आपके समक्ष प्रस्तुत है। आशा है पाठक की तरफ से अनेक सुझाव आएँगे, जो न केवल लेखक के लिए अपितु खादी-जगत के लिए कारगर सिद्ध होंगे।

(पंकज कुमार सिंह)

सितंबर, 2016

आभार

मैं अपने गुरुवर डॉ. मनोज कुमार राय का आभारी हूँ, जिनके कुशल निर्देशन एवं स्नेहिल अनुशासन में खादी पर गहन अध्ययन कर पाया। पुस्तक लेखन और प्रकाशन के बीच विविध कार्यों को प्रभावी रूप से करने का निर्देशन डॉ. राजीव रंजन गिरि और डॉ. धर्मेंद्र कुमार मिश्र से मिलता रहा। आदरणीय श्री ज्ञान पांडेय के सहयोग से पुस्तक प्रकाशित करने का संबल मिला। अतः मैं इन सभी के प्रति आभार प्रकट करता हूँ।

महात्मा गांधी ग्रामीण औद्योगीकरण संस्थान, वर्धा के भूतपूर्व निदेशक डॉ. टी. करुणाकरण, और वरिष्ठ वैज्ञानिक अधिकारी श्री महेश कुमार सिंह ने खादी की तकनीकी पक्ष को स्पष्ट किया। वहीं खादी के सैद्धांतिक पक्ष को स्पष्ट करने वाले श्री बालविजय भाई (संयोजक, खादी मिशन), प्रवीणा ताई (परमधाम, पवनार), डॉ. विभा गुप्ता (अध्यक्ष, मगन संग्रहालय समिति, वर्धा), प्रो. रामजी सिंह, प्रो. रामप्रकाश द्विवेदी (काशी विद्यापीठ), श्री जवाहरलाल सेठिया (मंत्री, राजस्थान खादी ग्रामोद्योग संस्था संघ, जयपुर), डॉ. ब्रह्मानंद मिश्र, श्री रामदास शर्मा (अध्यक्ष, राजस्थान खादी संस्था संघ, जयपुर), श्री रंजीत भाई देसाई (ग्राम सेवा मंडल, गोपुरी), श्री प्रदीप दीक्षित, डॉ. उल्लास जाजू (वर्धा) आदि का भी आभारी हूँ।

कत्तिन, बुनकर, खादी संस्थाओं के मंत्री, अध्यक्ष, कार्यकर्ता आदि ने खादी से संबंधित अपना ज्ञान व अनुभव बाँटे। अतः मैं इन सभी का भी आभार प्रकट करता हूँ। मैं 'अंतिम जन', 'जागृति', 'The Equanimist', 'नित्यनूतन' पत्रिका के संपादकों के प्रति आभारी हूँ, जिन्होंने इस पुस्तक में शामिल कुछ आलेख प्रकाशित किए।

बड़े भाई तुल्य डॉ. गोविंद प्रसाद वर्मा का भी आभारी हूँ जिन्होंने समय-समय पर न केवल वर्तनी की अशुद्धि को दूर किया अपितु मार्गदर्शन भी दिया। मैं अपनी कर्मठ और अध्येता धर्मपत्नी श्रीमती अपर्णा सिंह के प्रति भी आभार व्यक्त करता हूँ, जो घरेलू कार्यों को अपने कठोर परिश्रम से संभाले रहती हैं और पुस्तक लिखने के लिए प्रेरित करती रहीं हैं। अपने माता-पिता, चाचा, बहन के प्रति भी आभार प्रकट करना अपने प्रति ही आभार प्रकट करना है, जिन्होंने अब तक पढ़ने के लिए प्रेरित किया, जिससे यह पुस्तक लिख पाया। इसके अलावा मैं गुरुवर डॉ. नृपेंद्र प्रसाद मोदी, डॉ. डी. एन. प्रसाद, डॉ. निशीथ राय, डॉ. अरुण प्रताप सिंह तथा मित्रों में - डॉ. उमेश कुमार सिंह, श्री प्रदीप त्रिपाठी, विकास, सुश्री दिव्या, भाई पवन, पुनीत, प्रशांत के साथ सभी खादीजन के प्रति आभारी हूँ, जो प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से इस पुस्तक को पूरा करने में सहभागी रहें।

(पंकज कुमार सिंह)

अनुक्रम

भूमिका	2
आभार	4
सूत-पचीसी	7
वैदिककालीन खादी	9
खादी विचार	17
खादी का ऐतिहासिक और वैचारिक संदर्भ	29
गाँधी-मार्ग में हस्तशिल्प की महत्ता	57
खादी में तकनीकी विकास की गाँधीवादी अवधारणा	64
खादी: कल और आज	74
खादी से संबंधित कुछ महत्त्वपूर्ण पुस्तकों की सूची	80